पंजीयन फार्म

नाम : श्री/डॉ./प्रो. .....

पदनाम : .....

विभाग : .....

मोबाईल न. : .....

ई-मेल : .....

शोध पत्र का शीर्षक :.....

शोध सारांश (लगभग 300 शब्द) :.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

पत्र प्रस्तुति : ऑनलाइन/ ऑफलाइन

समन्वयक

डॉ. सोनल सिंह
सहायक निदेशक
महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ शोधपीठ

आयोजन सचिव

डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी
सहायक ग्रंथालयी
महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ शोधपीठ

सह आयोजन सचिव

डॉ. सुनील कुमार
रिसर्च एसोसिएट
महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ शोधपीठ

डॉ. हर्षवर्धन सिंह
वरिष्ठ शोध अध्येता
महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ शोधपीठ

तकनीकि सहयोग

श्री शिवनाथ
राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर

चिन्मयानन्द मल्ल
महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ शोधपीठ

पंजीकरण

निम्नलिखित गूगल फार्म लिंक के माध्यम से पंजीयन एवं अपने शोध–पत्र का सारांश प्रेषित करें।

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSfR9C4L47uETkwwaDrYGWFhY48nHjMT52zYmkzl6aq8nNw7GA/viewform?usp=preview

(स्कैन कर सीधे भी पंजीयन कर सकते हैं)

शोध–पत्र सारांश प्रेषित करने की अंतिम तिथि : 15 फरवरी 2025

पूर्ण शोध–पत्र/पी.पी.टी. प्रेषित करने की अंतिम तिथि : 25 फरवरी 2025

पंजीयन शुल्क विवरण:- शिक्षकों के लिए - ₹ 500/-
शोधार्थियों एवं छात्रों के लिए - ₹ 300/-

पंजीयन शुल्क जमा हेतु विवरण :- A/c No. 331010100028307 (Axis Bank)
IFC CODE UTIB0000331
Mob No. 9415379447

नोट : चयनित शोधपत्रों को ISBN युक्त सम्पादित पुस्तक के रूप में प्रकाशित भी किया जाएगा।

संपर्क

डॉ. सोनल सिंह - 8299829806
डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी - 9415848512
डॉ. सुनील कुमार - 9935823171
डॉ. हर्षवर्धन सिंह - 9415286885
श्री शिवनाथ - 8922919252

E-Mail : seminar.mygsgsp@gmail.com

राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर

(संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश)

एवं

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

(दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय)

द्वारा आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नाथपंथ एवं बौद्ध परम्परा की प्रासंगिकता'

दिनांक : 01-02 मार्च, 2025

स्थान : महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

संरक्षक

प्रो. पूनम टण्डन
माननीय कुलपति
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर

मुकेश कुमार मेश्राम
प्रमुख सचिव
संस्कृति एवं पर्यटन विभाग
उत्तर प्रदेश

संयोजक

डॉ. कुशल नाथ मिश्रा
उप निदेशक
महायोगी गुरू श्री गोरखनाथ शोधपीठ
गोरखपुर

डॉ. यशवंत सिंह राठौर
उप निदेशक
राजकीय बौद्ध संग्रहालय
गोरखपुर

परामर्शदात्री समिति -

01. प्रो0 शोभा गौड़, कुलपति, माँ विध्यवासिनी विश्वविद्यालय, मिर्जापुर ।
02. प्रो0 सदानंद प्रसाद गुप्ता, पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष,उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ ।
03. प्रो0 राजवंत राव, अधिष्ठाता, कला संकाय, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर ।
04. प्रो0 अनुभूति दुबे, अधिष्ठाता, छात्र कल्याण, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर ।
05. प्रो0 राजेश सिंह, अधिष्ठाता, शिक्षा संकाय, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर ।
06. प्रो0 श्रीवर्धन पाठक, अधिष्ठाता, वाणिज्य संकाय, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर ।
07. प्रो0 दिनेश कुमार सिंह, प्राणि विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर ।
08. प्रो0 नंदिता सिंह, अंग्रेजी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर ।
09. प्रो0 हर्ष कुमार सिन्हा, रक्षा अध्ययन विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर ।
10. प्रो0 दीपक प्रकाश त्यागी, हिन्दी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर ।
11. प्रो0 मनोज कुमार तिवारी, इतिहास विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर ।

संगोष्ठी का परिचय

भारतीय धर्म साधना में नाथ पंथ एवं बौद्ध परम्परा अत्यन्त प्राचीन एवं समृद्ध परम्परा है। एक ओर योग मार्ग के आचार्य गुरु गोरखनाथ, वहीं दूसरी ओर मैत्री, करुणा, मुदिता के उपासक गौतम बुद्ध इन दोनों ही साधकों ने जनमानस पर गहरी छाप छोड़ी है। दोनों ही परम्पराओं ने युगों तक समाज को प्रभावित किया तथा आगे भी करती रहेंगी। भारतीय साधना परम्परा में ये दोनों ही साधना पद्धति समाज के विकास में अग्रणी भूमिका निभाती हैं। एक ओर योग के माध्यम से शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा का हनन होता है, वहीं मैत्री भाव से समाज में करुणा एवं मुदिता का प्रकाश फैलता है। विश्वशांति के अग्रदूत दोनों ही साधकों के विचारों पर चिन्तन, मनन, शांति एवं सौहार्द बनाये रखने के लिये आवश्यक है।

आधुनिक काल में बौद्ध दर्शन का प्रभाव विश्वव्यापी है, क्योंकि यह एक ऐसा दर्शन प्रस्तुत करता है, जो तर्क करुणा और आत्म–अवलोकन पर आधारित है। बौद्ध परम्परा ने एक मध्यम मार्ग की स्थापना की, जो न केवल धार्मिक विश्वास और आधुनिक विज्ञान के मध्य प्रतीयमान विरोध को सुलझाने में सहायक है, बल्कि वर्तमान काल की क्रियात्मक मार्गों को भी पूरा करता है। नाथ पंथ भी बौद्ध दर्शन की भांति मध्यम मार्गीय है। बौद्ध दर्शन की उत्तरवर्ती सिद्ध परम्परा का नाथ परम्परा से गहरा सम्बंध है।

नाथ परम्परा की क्रियात्मक योग पद्धतियाँ, जैसे हठयोग और ध्यान न केवल शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत उपयोगी हैं, बल्कि यह आधुनिक जीवन की चुनौतियों से सामना करने के लिए भी आवश्यक साधन प्रदान करती हैं। इसके साथ ही, नाथ संतों ने सदैव समाज के नैतिक उत्थान और समरसता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज के वैश्विक परिदृश्य में हिंसा, असहिष्णुता और मानसिक तनाव बढ़ रहे हैं, बौद्ध और नाथ परम्परा की शिक्षाएँ विश्व शांति, नैतिकता और मानवीय मूल्यों को पुर्नस्थापित करने में अहम योगदान दे सकती हैं।

प्रस्तुत द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में 'नाथ पंथ एवं बौद्ध परम्परा की प्रासंगिकता' विषय पर प्रस्तावित है। इस संगोष्ठी में दोनों ही परम्पराओं में समानता, विविधता उपादेयता, महत्व इत्यादि विषयों पर चर्चा की जायेगी ।

निम्नलिखित उप–विषयों पर शोध–पत्र आमंत्रित हैं –

01. नाथ पंथ का उद्भव एवं विकास तथा बौद्ध परम्परा
02. बौद्ध परम्परा एवं नाथ पंथ का तुलनात्मक अध्ययन
03. नाथ पंथ एवं बौद्ध संग्रहालय
04. भारतीय ज्ञान परम्परा में नाथ पंथ
05. प्राकृत भाषा एवं आदि हिन्दी (अपभ्रंश) के अन्तः सम्बन्ध
06. नवनाथ एवं सिद्धाचार्य
07. पुरातात्विक दृष्टिकोण से नाथ पंथ एवं बौद्ध परम्परा का अवलोकन
08. विश्वशांति में बौद्ध दर्शन एवं नाथ परम्परा का अवदान
09. नैतिक मूल्य के वर्तमान संदर्भ एवं नाथ परम्परा
10. भारतीय दर्शन में बौद्ध दर्शन की समृद्ध परम्परा
11. स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से योग एवं हठयोग परम्परा
12. सिद्धमत, नाथपंथ तथा बौद्ध परम्परा
13. नाथ पंथीय साहित्य

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

भगवान बुद्ध की उदात्त करुणा, महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ की तप साधना, सन्त–प्रवर कबीर की युगान्तकारी वैचारिकी, द्वारा ही मुख्य रूप से विश्वविद्यालयीय परिक्षेत्र के लोकचित का निर्माण हुआ है। गोरखपुर शहर में नाथपंथ का सर्वोच्च अधिष्ठान श्रीगोरखनाथ मंदिर स्थित है, जो महायोगी श्रीगोरखनाथ की तपोभूमि है और यहीं पर वे समाधिस्थ हुए। श्रीगोरखनाथ मंदिर को एक सिद्धपीठ होने की मान्यता के साथ–साथ आस्था एवं अर्चना के प्रमुख केन्द्र के रूप में ख्याति है । श्रीगोरक्षपीठ के पूज्य पीठाधीश्वरो ने समरस समाज के निर्माण में, हिन्दू–संस्कृति के पुनरुद्धार में अभूतपूर्व योगदान दिया है। गोरखपुर के बौद्धिक परिवेश में दीर्घकाल से यह अन्तर्भूत भाव प्रवाहमान रहा है कि नाथपंथ के दार्शनिक, सार्वभौमिक सिद्धांतों एवं अनुप्रयोगों को जन–मन तक संचारित करने के लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन केन्द्र की स्थापना हो। महायोगी गुरु श्रीगोरक्ष नाथ शोधपीठ के स्थापना से यही भाव मूर्तरूप लिया है।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ का शिलान्यास गोरक्षपीठाधीश्वर महंत श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज माननीय मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश शासन के कर कमलों द्वारा 30 नवंबर 2018 को हुआ। 3 जनवरी 2023 को मोहन सिंह भवन से शोधपीठ विश्वविद्यालय के महाराणा प्रताप परिसर में निर्मित भवन में यह विभाग स्थानान्तरित हुआ। नव निर्मित शोधपीठ का निर्माण उत्तर प्रदेश सरकार के संस्कृति विभाग द्वारा किया गया। इस भवन में पुस्तकालय संग्रहालय, संगोष्ठी कक्ष, प्रकाशन हेतु संगणक कक्ष, अतिथि गृह के साथ–साथ शैक्षिक एवं शिक्षणेत्तर पद धारकों के कक्ष के अतिरिक्त सामान्य प्रशासन कार्यालय की भी व्यवस्था है। महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की स्थापना का उद्देश्य यत्र–तत्र विकीर्ण मन्तव्यों एवं उपदेशों को समेकित कर विश्व के सम्मुख प्रस्तुत करना है। गोरखपुर विश्वविद्यालय में स्थापित यह शोध संस्थान जिज्ञासुओं की तात्विक चिन्तन में अभिवृद्धि के साथ–साथ सामाजिक समरसता का संदेश भी संचारित कर रहा है।

राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर

पूर्वी उत्तर प्रदेश बौद्ध धर्म के उद्भव व विकास का हृदय स्थल रहा है। महात्मा बुद्ध के जीवन की घटनाओं से सम्बन्धित स्थान – लुम्बिनी, कपिलवस्तु, देवदह, कोलियों का रामग्राम एवं तथागत की महापरिनिर्वाण स्थली कुशीनगर इसके मुख्य साक्ष्य हैं। भगवान बुद्ध की स्मृतियों से जुड़ा होने के कारण पर्यटन की दृष्टि से यह अन्तर्राष्ट्रीय महत्व का क्षेत्र है। इस क्षेत्र में यत्र–तत्र बिखरी कला सम्पदा एवं देश के अन्य भागों से प्राप्त कलाकृतियों का संकलन, अभिलेखीकरण, शोध एवं प्रदर्शन कर जनसामान्य को इसके गरिमामय इतिहास की जानकारी प्राप्त कराने के उद्देश्य से वर्ष 1986–87 में राजकीय बौद्ध संग्रहालय गोरखपुर की स्थापना की गई, जो वर्तमान में रामगढ़ताल परियोजना के अन्तर्गत निर्मित संग्रहालय भवन में स्थित है। सम्प्रति संग्रहालय में (07) सात वीथिकाएं जनसामान्य के अवलोकनार्थ खुली हुई हैं।

1. बुद्ध धम्म वीथिका
2. राहुल सांकृत्यायन बौद्ध कला वीथिका
3. पुरातत्व वीथिका
4. कला के विविध आयाम वीथिका
5. चित्रकला वीथिका
6. मानव विकास–बाल वीथिका
7. जैन कला वीथिका

इस संग्रहालय में एक सन्दर्भ पुस्तकालय भी है। संग्रहालय में प्रागैतिहासिक कलाकृतियां प्रस्तर, मृण, धातु मूर्तियां, सिक्के, लघुचित्र, थंका चित्र, हाथी दाँत कलाकृतियां एवं हस्तलिखित ग्रन्थ आदि के साथ–साथ क्षेत्रीय पुरास्थलों से प्राप्त पुरा सम्पदा का संकलन है, जिनकी कुल संख्या वर्तमान में 4429 हैं। संग्रहालय पूर्वांचल के गरिमामय इतिहास कला एवं संस्कृति के बहुमुखी विकास हेतु सतत् प्रयत्नशील है।

संग्रहालय सांस्कृतिक/शैक्षणिक गति विधि क्षेत्र

1. माह का प्रदर्श
2. शोध ग्रंथालय
3. यशोधरा सभागार
4. प्रदर्शनी हाल
5. बाल संग्रहालय गतिविधि क्षेत्र
6. यादगार वस्तु विक्रय पटल

संग्रहालय भ्रमण समय

पूर्वाह्न 10:30 से अपराह्न 4:30 बजे तक

स्कैन करें और राजकीय बौद्ध संग्रहालय के सोशल मीडिया पेज से जुड़े